RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

12th HISTORY

ई- पाठशाला

विचारक, विश्वास और रचनाएं

सांस्कृतिक विकास

ONE SHOT

पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...

25 सितंबर 2026 || 03:30 PM

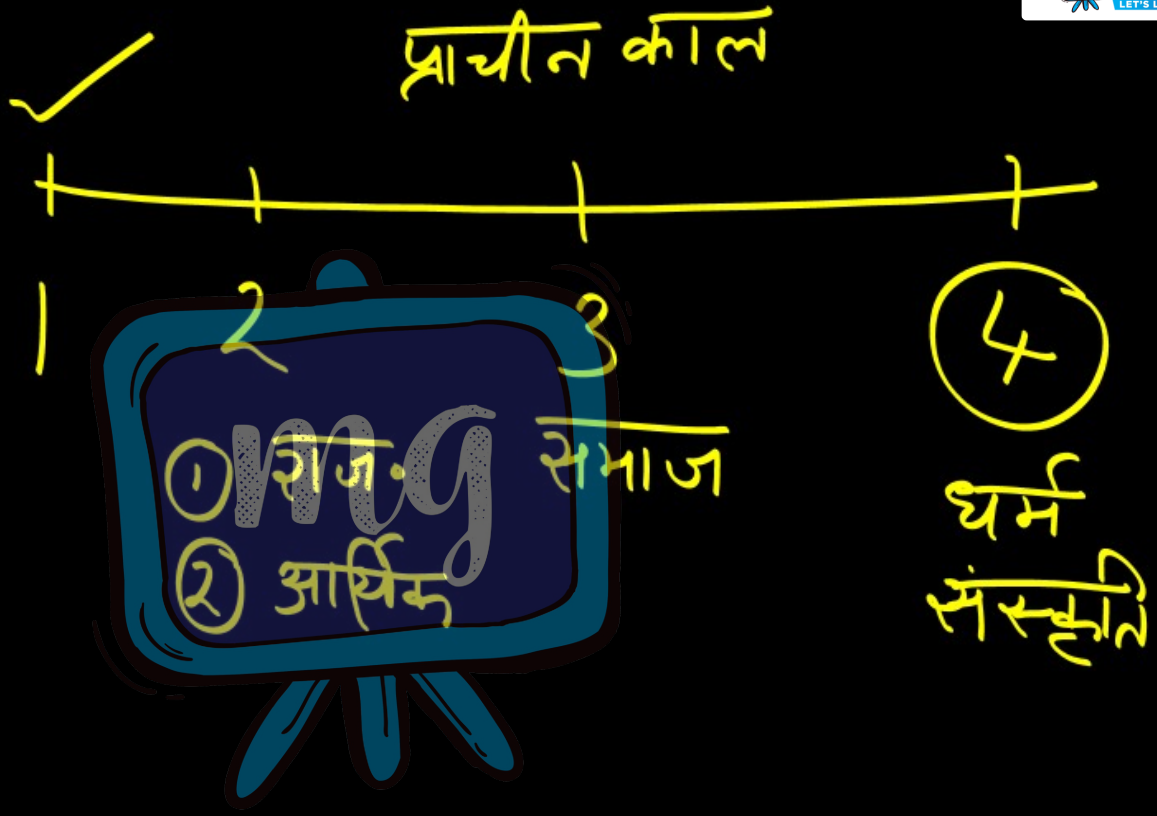


missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन काल



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इन रोमांचक विचारों और विश्वासों की दुनिया के पुनर्निर्माण के लिए जो स्त्रोत हैं उनमें
  - I. बौद्ध, जैन और ब्राह्मण ग्रंथों के अलावा
  - II. इमारतों और अभिलेखों जैसे भौतिक साक्ष्य प्रभूत मात्रा में है।
  - III. इस युग की बची हुई इमारतों में सबसे सुरक्षित है साँची का स्तूप।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सांची का महा स्तूप

स्तूप - मिट्टी या पत्थर का ऊंचा ढेर। टीला (बौद्ध धर्म के लोगों का पूजनीय स्थल, अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से करके उन पर मुख्य शहरों के स्तूप बनवाये)।



चैत्य → बौद्ध मंदिर

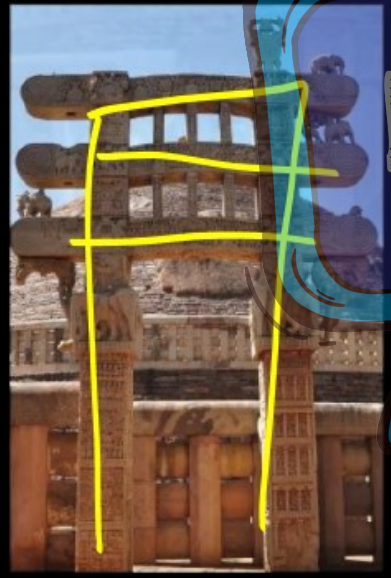
विहार → भिक्षुओं की रिहाइश।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER







- 19वीं सदी में यूरोपियों की साँची स्तूप में रुचि थी।
- फ्रांसीसी और अंग्रेज पूर्वी तोरणद्वार ले जाना चाहते थे।
- वे प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट हो गए।
- मूल तोरणद्वार साँची में ही सुरक्षित रहा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भोपाल शासकों का योगदान

- शाहजहाँ बेगम और सुल्तानजहाँ बेगम ने साँची के संरक्षण हेतु धन दिया।
- सुल्तानजहाँ ने संग्रहालय, अतिथिशाला और पुस्तकों के प्रकाशन में सहायता की।
- जॉन मार्शल ने अपने ग्रंथ सुल्तानजहाँ बेगम को समर्पित किए।
- विवेकपूर्ण निर्णयों से साँची स्तूप सुरक्षित रहा।
- इसकी खोज से प्रारंभिक बौद्ध धर्म की समझ बढ़ी।
- आज साँची संरक्षण का सफल उदाहरण है।

बौद्ध-धर्म की पृष्ठभूमि

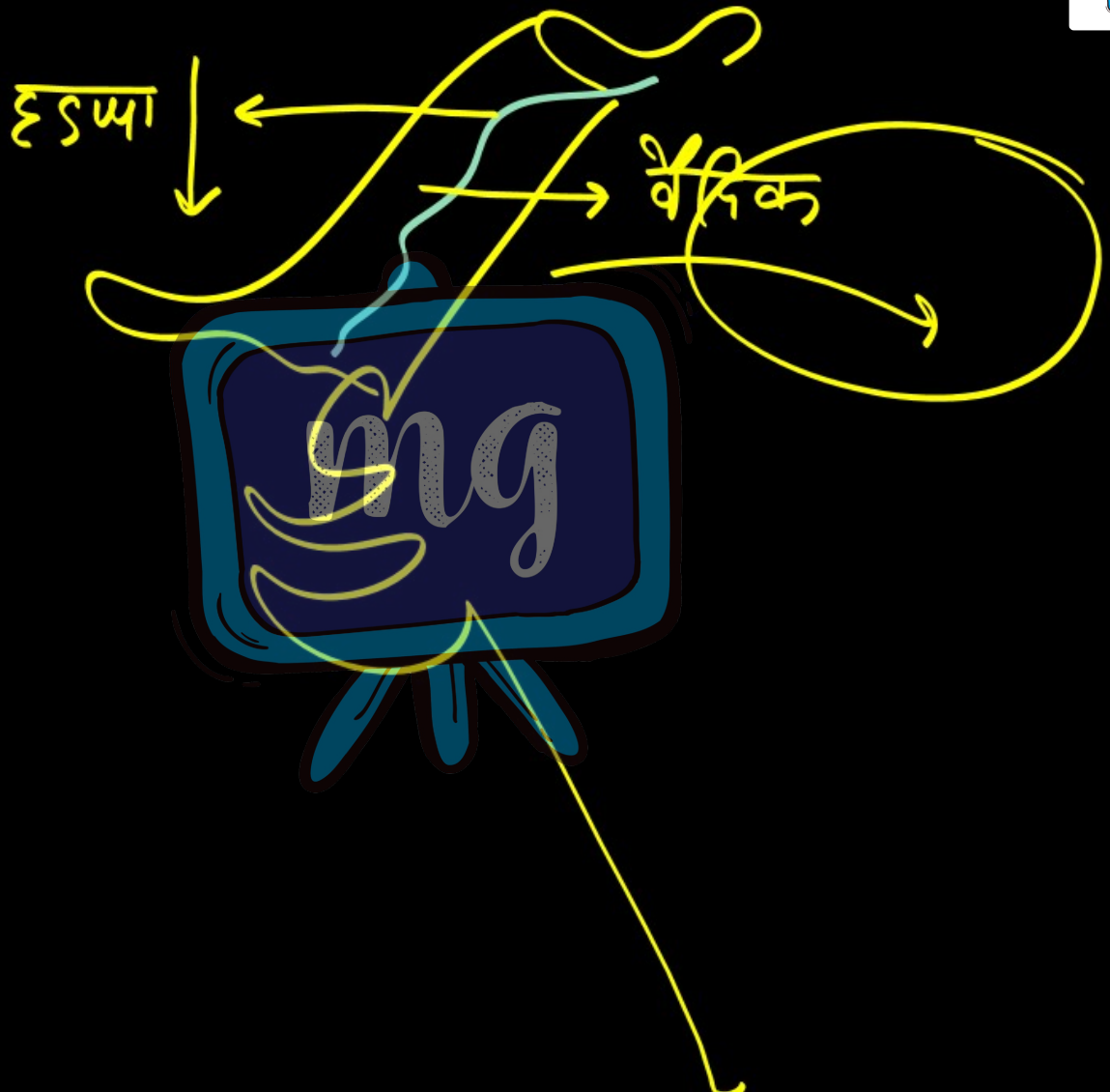


यज्ञ और विवाद

- ईसा पूर्व 1000 का काल विश्व इतिहास में महत्वपूर्ण था।
- इस समय जरथुस्त्र, कन्फ्यूशियस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, महावीर और बुद्ध जैसे चिंतक उभरे।
- उन्होंने जीवन, समाज और विश्व व्यवस्था को समझने का प्रयास किया।
- गंगा घाटी में नए राज्य और शहर उभर रहे थे।
- सामाजिक-आर्थिक बदलावों को भी इन चिंतकों ने समझने की कोशिश की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

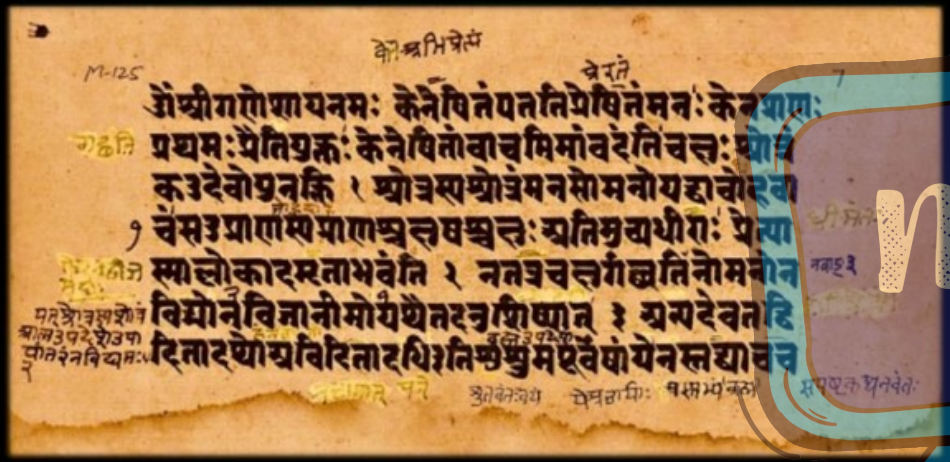
यज्ञों की परंपरा



- वैदिक परंपरा का प्रमुख ग्रंथ ऋग्वेद था।
- इसमें अग्नि, इंद्र, सोम आदि देवताओं की स्तुति है।
- यज्ञों में सुख, संतान, स्वास्थ्य और लंबी आयु की प्रार्थना की जाती थी।
- प्रारंभ में यज्ञ सामूहिक थे, बाद में गृहस्थ भी करने लगे।
- राजसूय और अश्वमेध जैसे यज्ञ राजा ब्राह्मण पुरोहितों की सहायता से करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नये प्रश्न :-

- उपनिषदों (छठी शताब्दी ई.पू.) में पाई जाने वाली विचारधाराओं से यह पता चलता है कि लोग
  1. जीवन का अर्थ
  2. मृत्यु के बाद जीवन की संभावना
  3. पुनर्जन्म के बारे में जानने के उत्सुक थे।
- क्या पुनर्जन्म अतीत के कर्मों के कारण होता था?
- ऐसे मुद्दों पर जोरदार बहस होती थी।
- मनीषी यथार्थ की वास्तविकता को जानने तथा अभिव्यक्ति करने में लगे थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

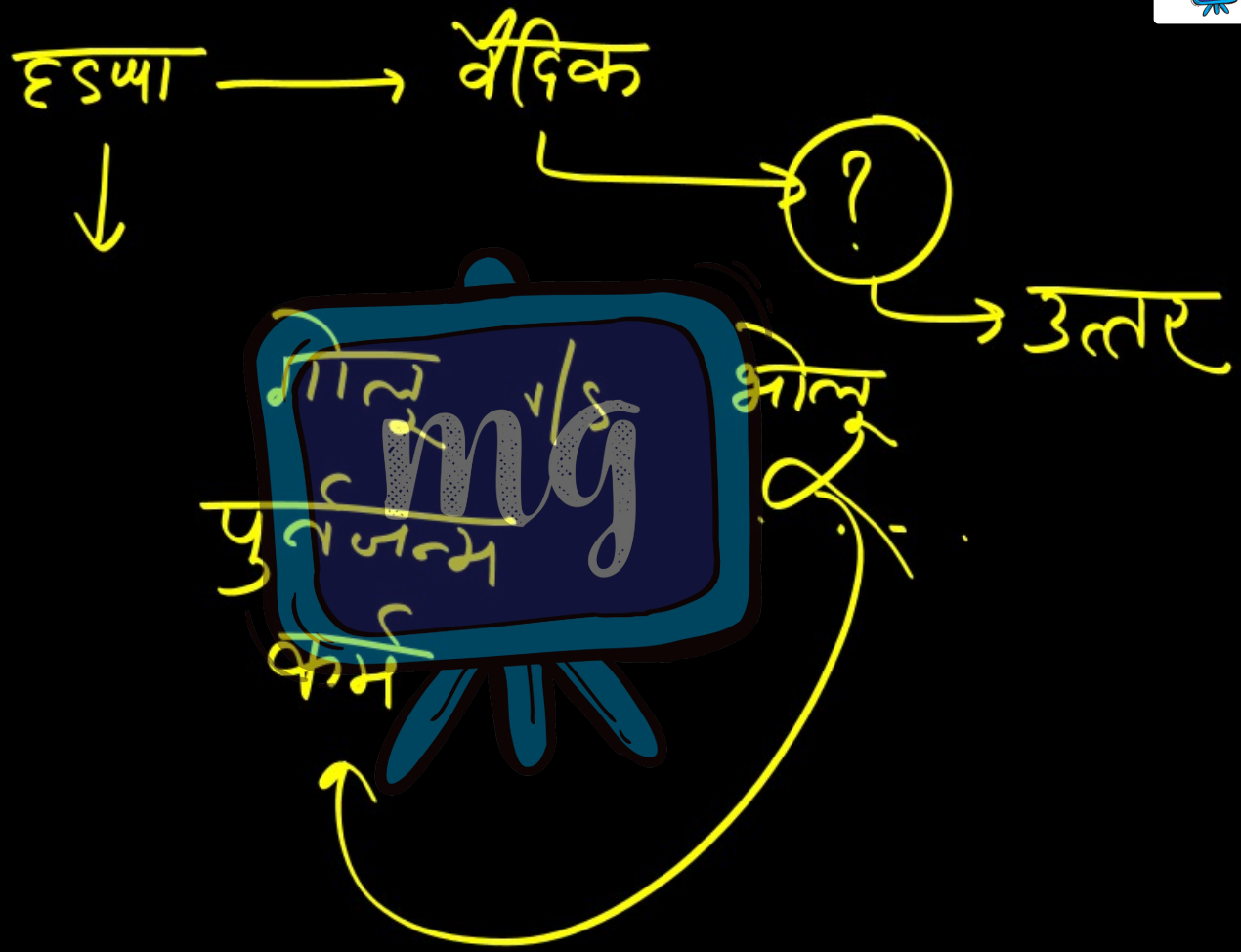


वाद-विवाद और चर्चाएं

- बौद्ध ग्रंथों में 64 चिंतन परंपराओं का उल्लेख है।
- शिक्षक घूम-घूमकर दर्शन पर तर्क-वितर्क करते थे।
- हारने वाला शिक्षक अपने अनुयायियों सहित दूसरे का शिष्य बन सकता था।
- महावीर और बुद्ध ने वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाए।
- उनके अनुसार मुक्ति का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बौद्ध ग्रंथ किस प्रकार तैयार और संरक्षित किये जाते थे

- बुद्ध की शिक्षाएँ पहले मौखिक रूप से दी गईं।
- उनकी मृत्यु के बाद शिक्षाओं का संकलन त्रिपिटक में हुआ।
- त्रिपिटक के तीन भाग थे—विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक।
- बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ दीपवंश और महावंश जैसे ग्रंथ लिखे गए।
- बौद्ध ग्रंथ पाली, संस्कृत, चीनी और तिब्बती भाषाओं में संरक्षित रहे।
- आधुनिक अनुवाद इन्हीं ग्रंथों के आधार पर तैयार किए गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

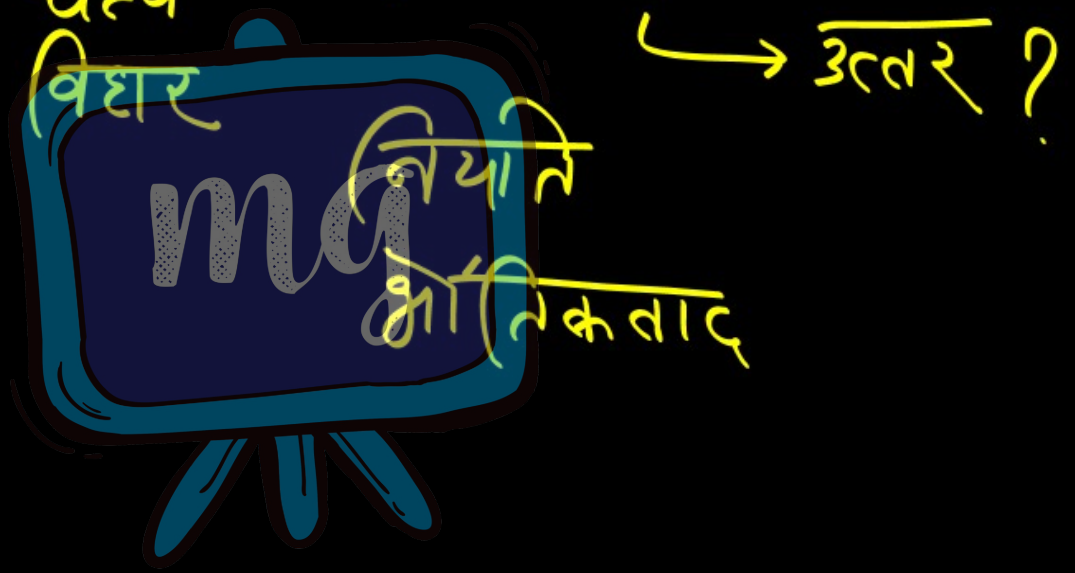
नियतिवादी और भौतिकवादी

- नियतिवादी: सब कुछ पूर्व निर्धारित मानते थे
- मक्खलि गोसाल प्रमुख शिक्षक थे।
- भौतिकवादी: भौतिक सुख को महत्व देते थे;
- अजित केसकंबलिन प्रमुख शिक्षक थे।
- इन परंपराओं के मूल ग्रंथ नष्ट हो गए, इसलिए जानकारी अन्य स्रोतों से मिलती है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लौकिक सुखों से आगे

बिहार

महावीर का संदेश–

- महावीर का प्रारम्भिक नाम वर्धमान था।
- इनका जन्म 599 ई.पू. कुंडलग्राम (वैशाली) में हुआ था तथा मृत्यु 527 ई.पू. में पावापुरी (कुशीनगर के पास) हुई।
- पत्नी का नाम यशोदा था।
- 30 वर्ष की आयु में गृह त्याग कर दिया था।
- जैन धर्म के मूल सिद्धान्त 600 ई.पू. में महावीर के जन्म के पहले से ही उत्तर भारत में प्रचलित थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

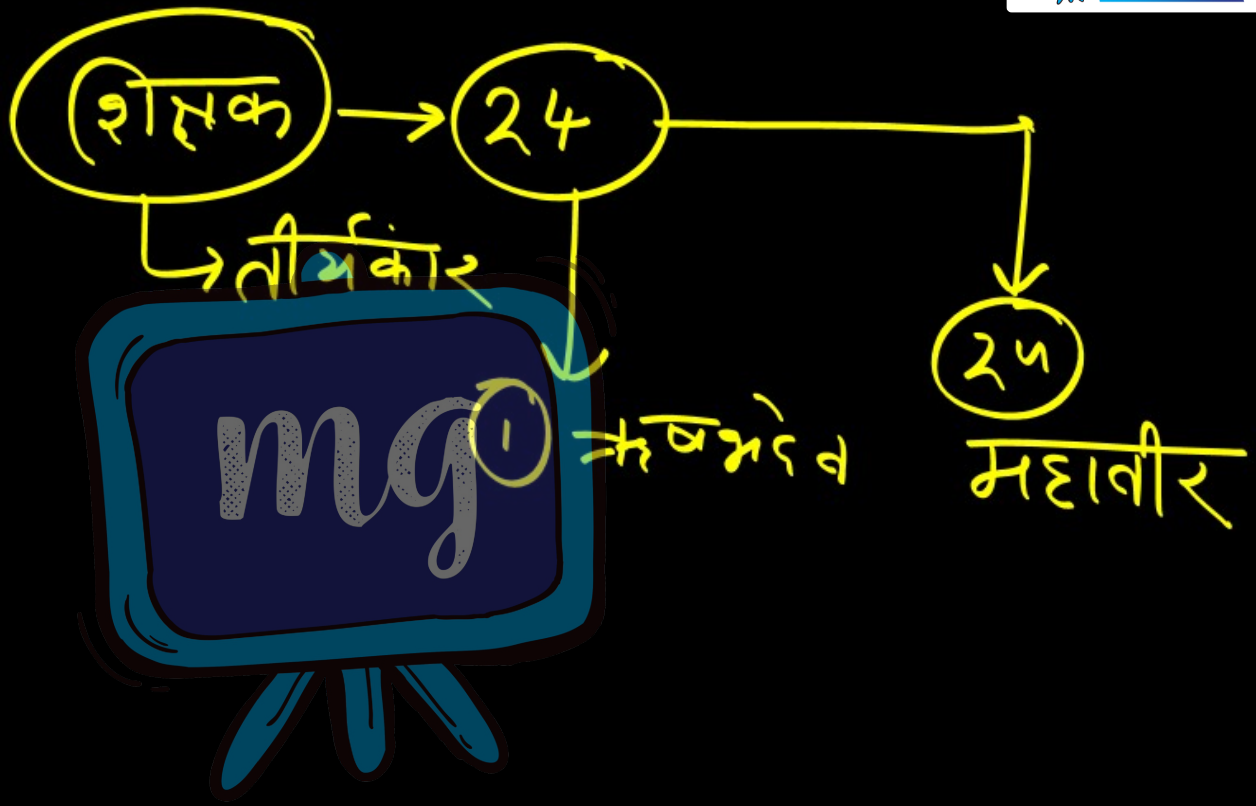
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- जैन परंपरा के अनुसार महावीर से पहले 23 शिक्षक हो चुके थे जिन्हें तीर्थंकर कहा जाता है।
  - प्रथम तीर्थंकर - ऋषभदेव
  - 23वें तीर्थंकर - पार्श्वनाथ
  - 24वें तीर्थंकर - महावीर स्वामी थे।
- ये तीर्थंकर वे महापुरुष थे जो पुरुषों और महिलाओं के जीवन की नदी को पार पहुंचाते थे।
- जैन धर्म के पंच महाव्रत जैन साधु व साध्वी 5 व्रत करते थे–

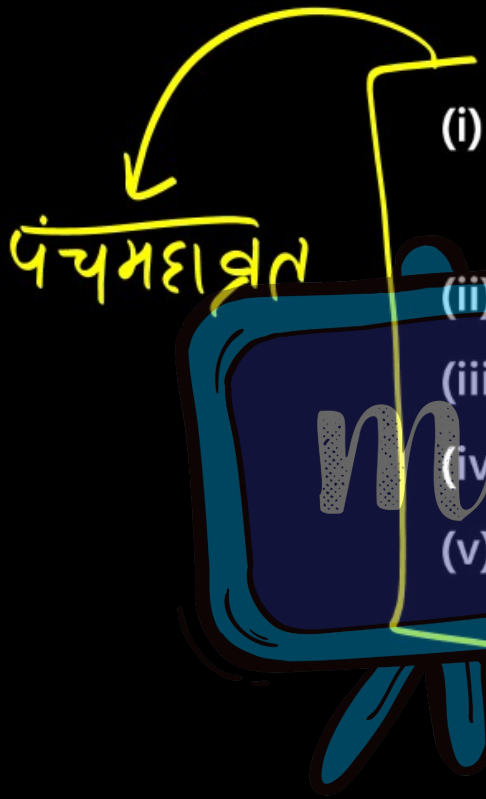
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(i) अहिंसा (मन व वचन से किसी को दुखी न करना व हत्या न करना)

(ii) सत्य (किसी भी स्थिति में असत्य नहीं बोलना चाहिए)

(iii) अस्तेय (किसी भी वस्तु या विचार की चोरी न करना)

(iv) अपरिग्रह (संग्रह नहीं करना)

(v) ब्रह्मचर्य (परमात्मा में विचरना)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

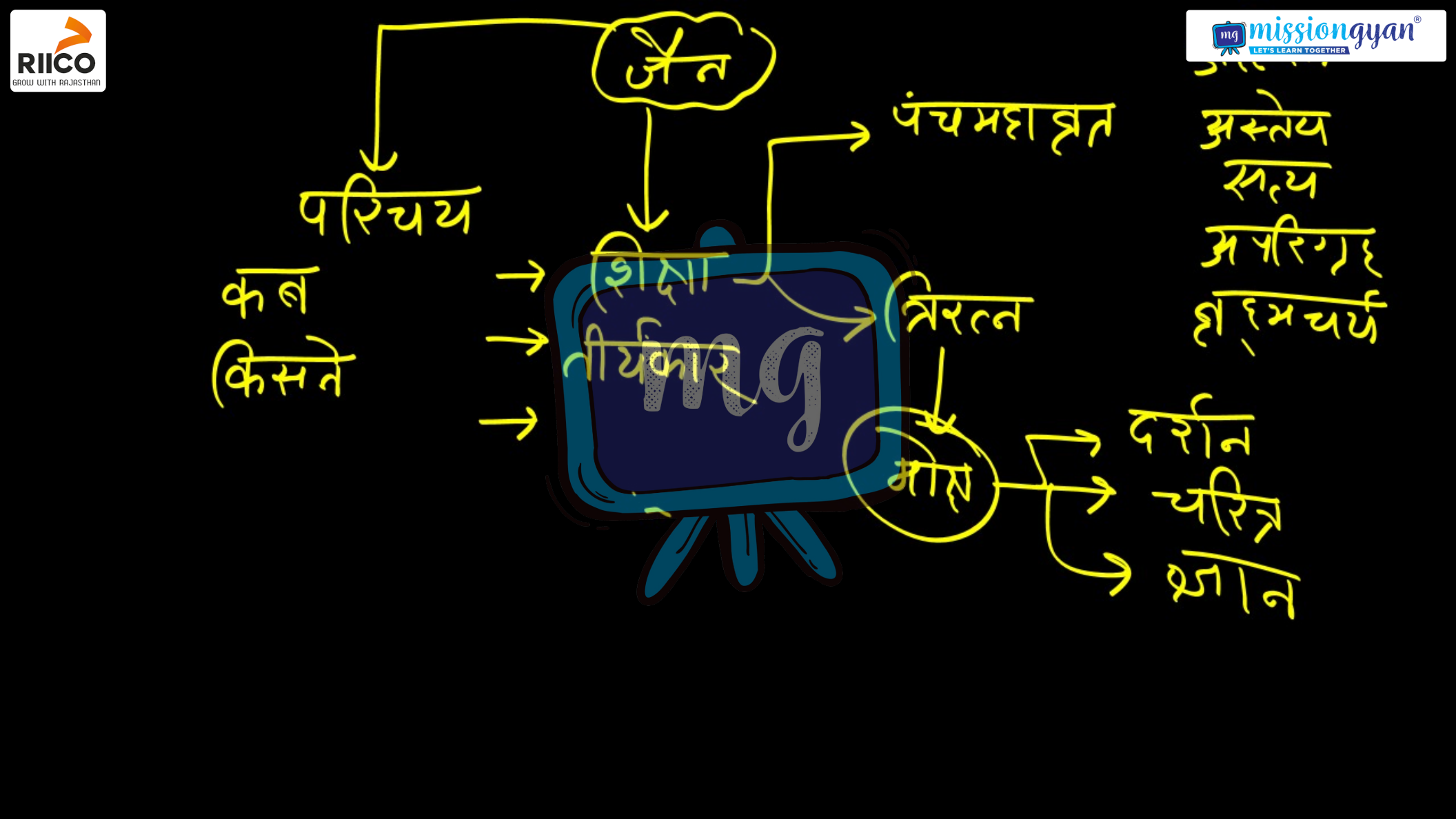
अहिंसा– जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा यह है कि सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। यह माना जाता है कि पत्थर, चट्टान और जल में भी जीवन होता है।

- जीवों के प्रति अहिंसा, खासकर इन्सानों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े मकोड़ों को न मारना जैन धर्म का केन्द्र बिन्दु है।
- जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने सम्पूर्ण भारतीय-चिंतन परंपरा को प्रभावित किया है।

- जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।
- कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत होती है। यह संसार के त्याग से ही संभव हो पाता है इसलिए मुक्ति के लिए विहारों में निवास करना एक अनिवार्य नियम बन गया।
- जैन धर्म के कैवल्य (मोक्ष) प्राप्ति का आधार त्रिरत्न है-
  - (i) सम्यक् दर्शन
  - (ii) सम्यक् चरित्र
  - (iii) सम्यक् ज्ञान

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मथुरा से प्राप्त तीर्थंकर की एक मूर्ति (लगभग तीसरी शतब्दी)

जैन धर्म का विस्तार:-

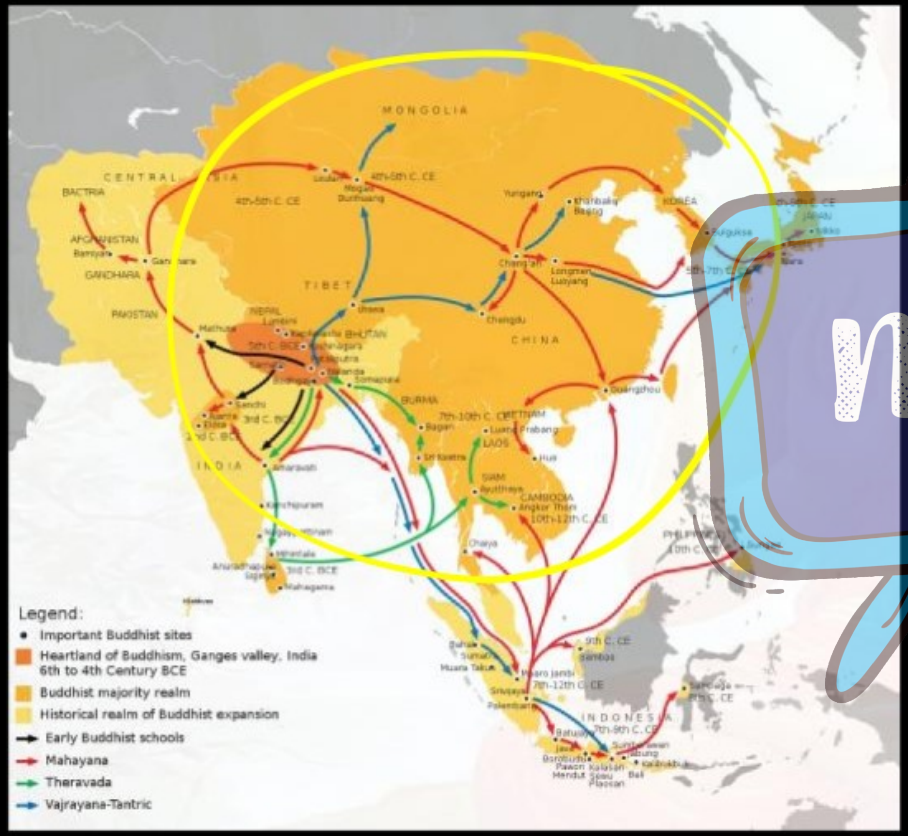
- धीरे-धीरे जैन धर्म भारत के कई हिस्सों में फैल गया।
- बौद्धों की तरह जैनों ने भी प्राकृत, संस्कृत, तमिल जैसी अनेक भाषाओं में काफी साहित्य का सृजन किया।
- सैकड़ों वर्षों से इन ग्रंथों की पांडुलिपियां मंदिरों से जुड़े पुस्तकालयों में संरक्षित है।
- धार्मिक परंपराओं से जुड़ी हुई सबसे प्राचीन मूर्तियों में जैन तीर्थंकरों के उपासकों द्वारा बनवाई गई मूर्तियाँ उपमहाद्वीप के कई हिस्सों में पाई गई हैं।



चौदहवीं सदी के जैन ग्रंथ की
पांडुलिपि का एक पन्ना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बुद्ध और ज्ञान की खोज

- बुद्ध उस युग के सबसे प्रभावशाली शिक्षिकों में से एक थे।
- सैकड़ों वर्षों के दौरान उनके संदेश पूरे उपमहाद्वीप में और
- उसके बाद मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया, और जापान, श्रीलंका से समुद्र पार कर म्यांमार, थाइलैण्ड और इण्डोनेशिया तक फैले।
- बुद्ध की शिक्षाओं को बौद्ध ग्रंथ का बहुत परिश्रम से संपादन, अनुवाद और विश्लेषण कर के जाना गया।
- इतिहासकारों ने उनके जीवन के बारे में चरित लेखन से जानकारी इकट्ठी की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संत चरित्र – किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी होती है। जो उसके उपलब्धियों का गुणगान करते हैं, लेकिन यह तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह सही नहीं होते।







- इनमें से कई ग्रंथ बुद्ध के जीवन काल से लगभग 100 वर्षों के बाद लिखे गये। जिनमें इस महान धर्मोपदेशक की याद को बनाये रखने की कोशिश की गई थी।
- इन परंपराओं के अनुसार सिद्धार्थ (बुद्ध के बचपन का नाम) शाक्य कबीले के सरदार के बेटे थे।
- जीवन के कटु-यथार्थों से दूर उन्हें महल की चारदीवारी के अंदर सब सुखों के बीच बड़ा किया गया।
- एक दिन उन्होंने अपने रथकार को उन्हें शहर घुमाने के लिए मना लिया।
- बाहरी दुनिया की उनकी पहली यात्रा काफी पीड़ादायक रही।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक वृद्ध व्यक्ति को, एक बीमार को और एक लाश को देखकर उन्हें गहरा सदमा पहुंचा।
- उसी समय उन्हें यह अनुभूति हुई कि मनुष्य के शरीर का क्षय और अंत निश्चित है।
- उन्होंने गृहत्याग किये संन्यासी को भी देखा उसे मानो बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से कोई परेशानी नहीं थी और उसने शांति प्राप्त कर ली थी।
- सिद्धार्थ ने निश्चय किया कि वे भी संन्यास का रास्ता अपनायेंगे और कुछ समय बाद वे महल त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े।



अमरावती (गुटूर जिला, आंध्र प्रदेश) में लगभग 200 ई. की एक मूर्ति जिसमें बुद्ध को महल से जाते हुए दिखाया गया है।

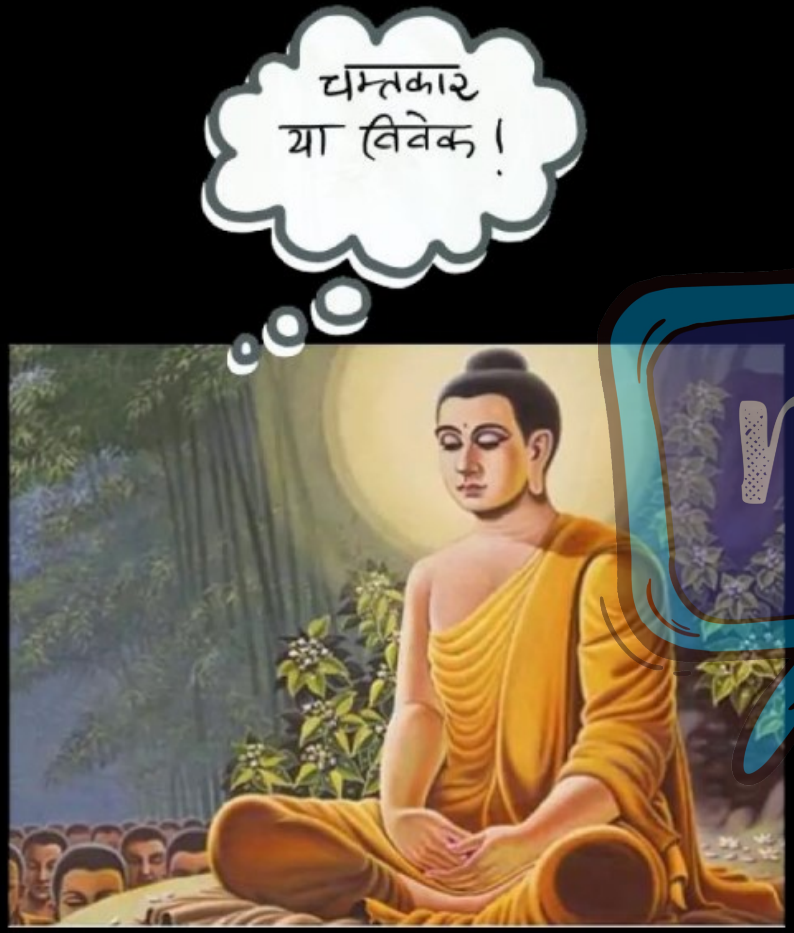
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सिद्धार्थ ने साधना के कई मार्गों का अन्वेषण किया। इनमें एक था शरीर को अधिक से अधिक कष्ट देना जिसके चलते वे मरते-मरते बचे।
- इन अतिवादी तरीकों को त्यागकर, उन्होंने कई दिन तक ध्यान करते हुए अंतत: ज्ञान प्राप्त कर लिया।
- इसके बाद उन्हें बुद्ध अथवा ज्ञानी व्यक्ति के नाम से जाना गया।
- बाकी जीवन उन्होंने धर्म या सम्यक जीवनयापन की शिक्षा दी।

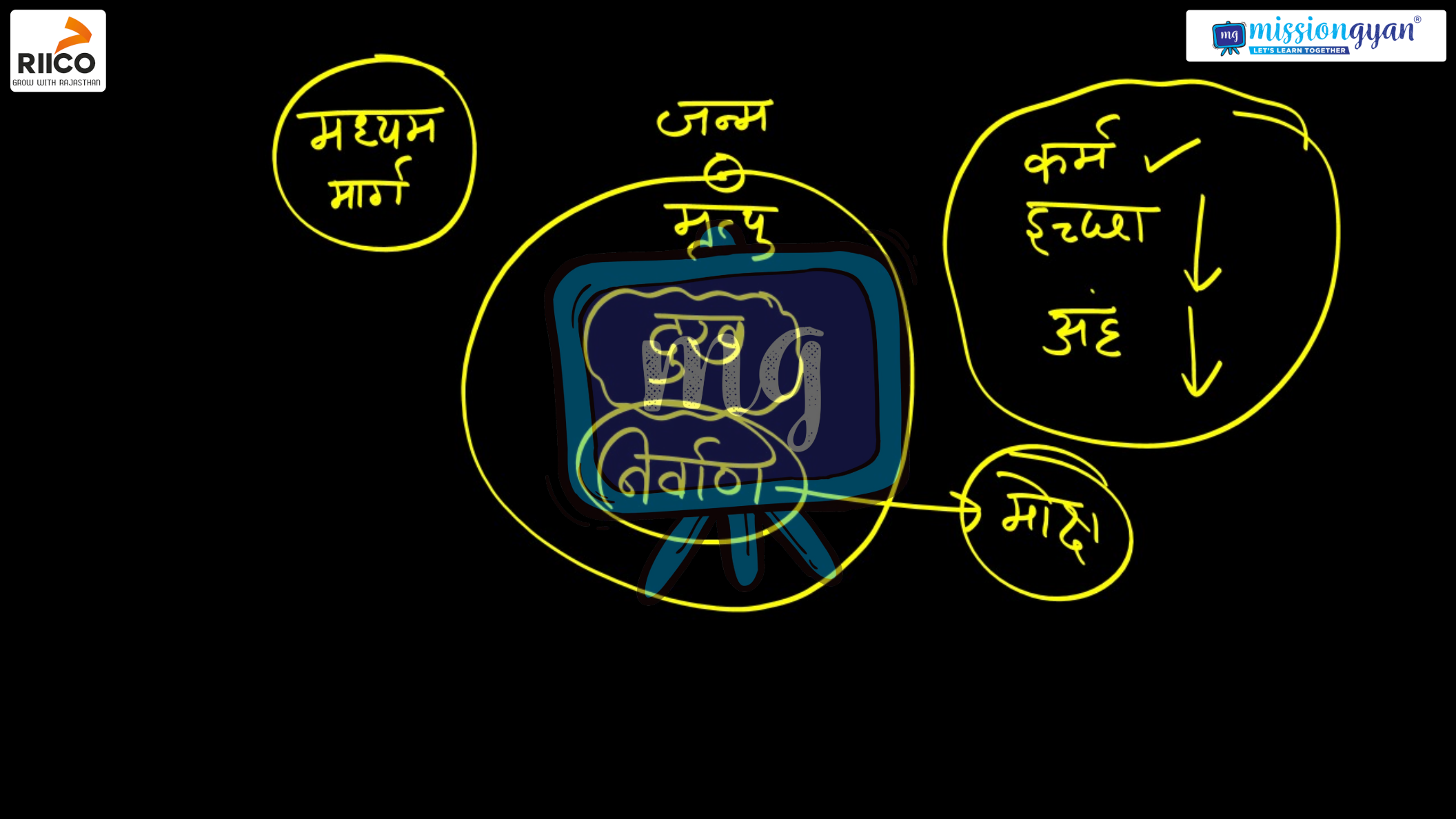
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



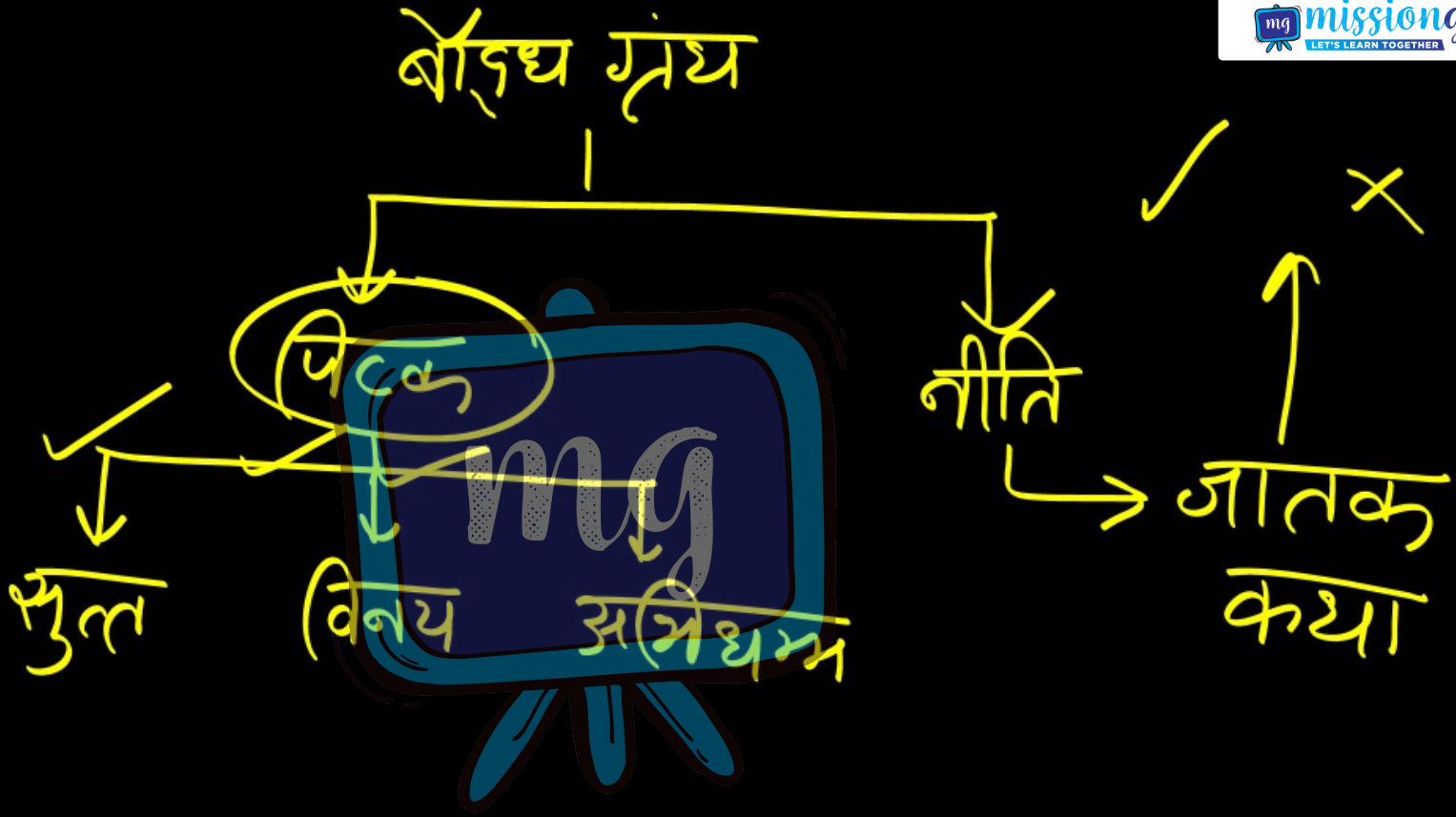
बुद्ध की शिक्षाऐं

- बुद्ध की शिक्षाएँ सुत्त पिटक की कथाओं से जानी जाती हैं।
- बुद्ध ने विवेक और तर्क पर जोर दिया।
- बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार अनित्य है और दुख से भरा है।
- मुक्ति के लिए मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए।
- बुद्ध ने व्यक्तिगत प्रयास और सम्यक कर्म को महत्व दिया।
- निर्वाण से जन्म-मृत्यु और दुख के चक्र का अंत होता है।
- बुद्ध का संदेश था—अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं खोजो।


मध्यम मार्ग
जन्म
मृत्यु
कर्म
इच्छा
अंत
निर्वाण
मोक्ष

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बुद्ध के अनुयायी

- बुद्ध ने संघकी स्थापना की।
- संघ के भिक्षु सादा जीवन जीते और भिक्षा पर निर्भर थे।
- पहले केवल पुरुष, बाद में महिलाएँ भी संघ में शामिल हुईं।
- महाप्रजापति गौतमी पहली भिक्षुणी बनीं।
- बुद्ध के अनुयायी हर सामाजिक वर्ग से थे।
- संघ में सभी को समान माना जाता था।
- निर्णय पहले सहमति से, नहीं तो मतदान से होते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बौद्ध साहित्य में कई चैत्यों की चर्चा है। इसमें बुद्ध के जीवन से जुड़ी जगहों का भी वर्णन है-
  - जहाँ वे जन्मे थे – लुम्बिनी
  - जहाँ उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया – बोधगया
  - जहाँ उन्होंने प्रथम उपदेश दिया – सारनाथ
  - जहाँ उन्होंने निब्बान प्राप्त किया – कुशीनगर
  - धीरे-धीरे ये सारी जगहें पवित्र स्थल बन गईं
- बुद्ध के समय से लगभग 200 वर्षों बाद असोक ने लुम्बिनी की अपनी यात्रा की याद में एक स्तंभबनवाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप कैसे बनाए गए



- स्तूपों की वेदिकाओं और स्तंभों पर मिले अभिलेखों से इन्हें बनाने और सजाने के लिए दिए गए दान का पता चलता है।
- कुछ दान राजाओं के द्वारा दिए गए थे (जैसे सातवाहन वंश के राजा),
- कुछ दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा दिए गए।
- **जैसे–** साँची के एक तोरणद्वार का हिस्सा हाथी दाँत का काम करने वाले शिल्पकारों के दान से बनाया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

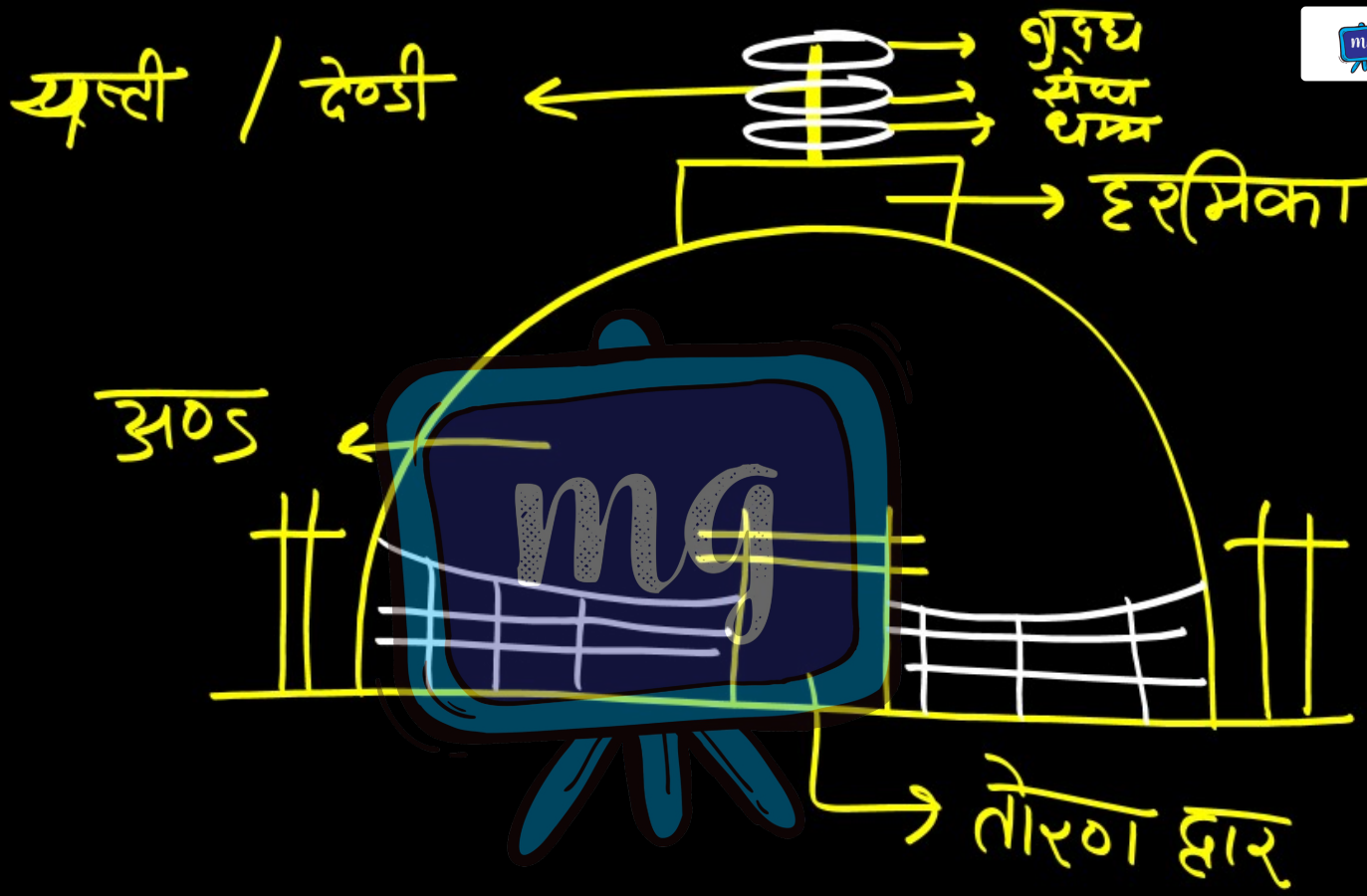
कैसे ?



राजा → अशोक

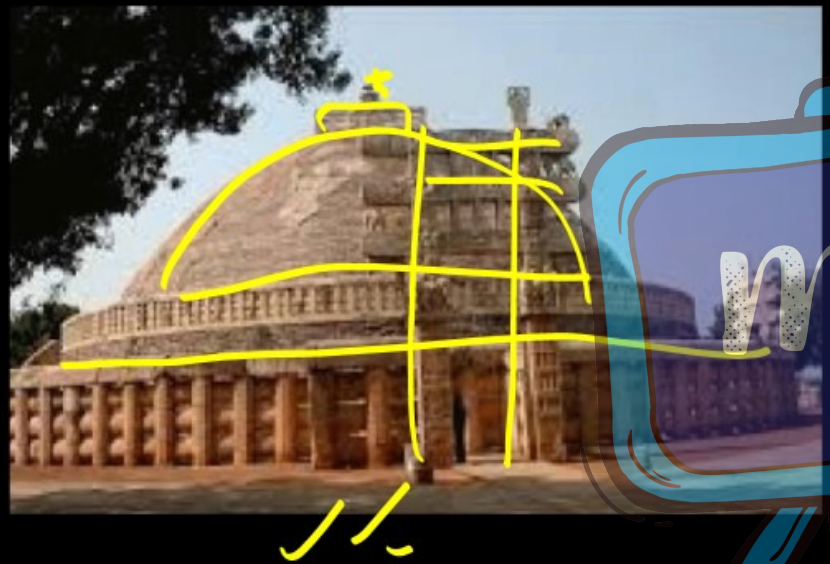
व्यापारी → श्रेणी

जनता → सहयोग

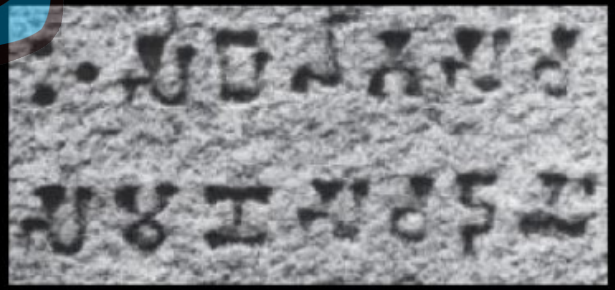

यष्टी / दण्डी
गृध्र संख्य पक्ष
दृश्मिका
अण्ड
तोरण द्वार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपना नाम, कईयों ने अपने गाँव या शहर का नाम, कईयों ने अपना पेशा और रिश्तेदारों के नाम भी लिखवायें हैं।
- इन इमारतों को बनाने में भिक्खुओं और भिक्खुनियों ने भी दान दिया।



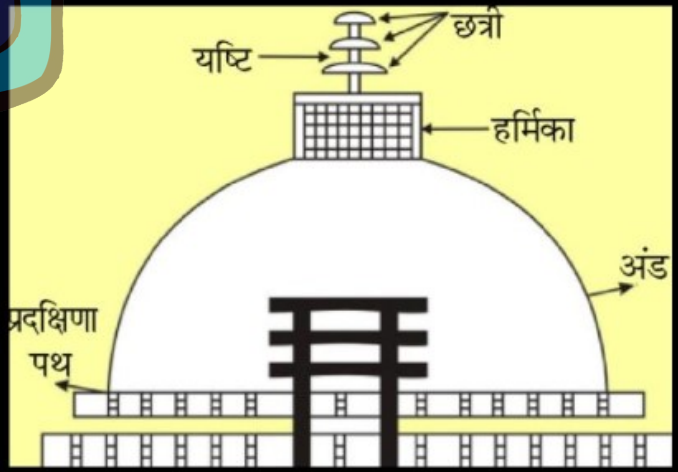
सांची का दानात्मक अभिलेख ऐसे सैकड़ों अभिलेख भरहुत तथा अमरावती में भी मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप की संरचना

- स्तूप (संस्कृत अर्थ टीला) का जन्म एक गोलार्द्ध लिए हुए मिटी के टीले से हुआ जिसे बाद में अंड कहा गया।
- धीरे-धीरे इसकी संरचना ज्यादा जटिल हो गई क्योंकि इसमें कई चौकोर और गोल आकारों का संतुलन बनाया गया।



- अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था।
- हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे जिस पर अक्सर एक या अधिक छत्री लगी होती थी।
- टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप

क्या ?

कैसे

कौन

संरचना

उदाहरण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप

- ये स्तूप बिना अलंकरण के हैं सिवाए इसके कि इनके चारों ओर पत्थर की वेदिकाऐं और तोरणद्वार है।
- ये पत्थर की वेदिकाएँ किसी बाँस के या काठ के घेरे के समान थीं।
- चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी।
- उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं तरफ़ रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे, मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों।
- बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

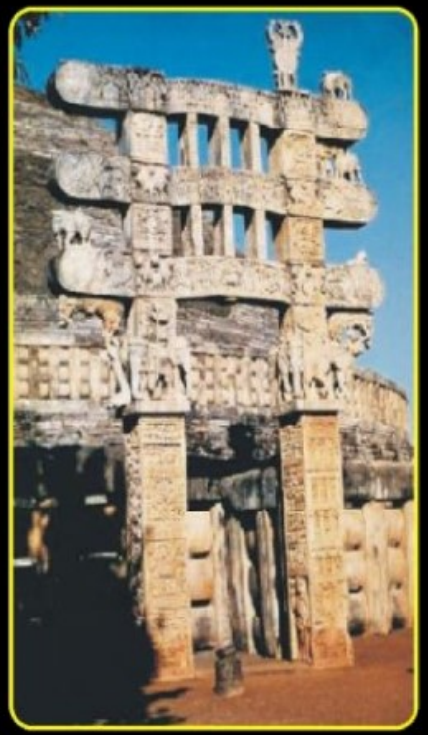
स्तूपों की खोज

अमरावती और साँची की नियति:-

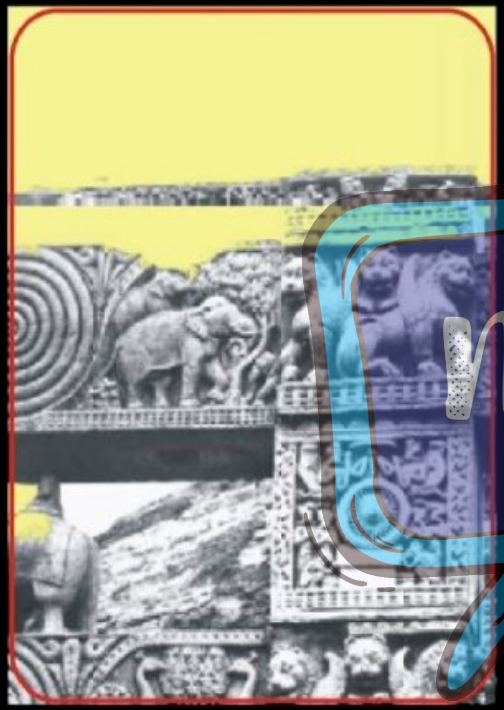
- 1796: अमरावती स्तूप के अवशेष मिले।
- 1854: गुंटूर के कमिश्नर ने मूर्तियाँ और पत्थर मद्रास भिजवाए।
- अमरावती के कई अवशेष कलकत्ता, मद्रास और लंदन ले जाए गए।
- एच.एच. कोल ने मूल मूर्तियों को स्थल पर ही सुरक्षित रखने की बात कही।
- अमरावती में संरक्षण नहीं हो पाया, जबकि बाद में साँची को स्थल पर सुरक्षित रखा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सांची का पूर्वी तोरणद्वार
सजीव मूर्तियां



तोरण का एक हिस्सा

साँची:-

- 1818 में साँची की खोज हुई; तब तीन तोरणद्वार खड़े थे और टीला सुरक्षित था।
- साँची के अवशेषों को बाहर ले जाने की बजाय वहीं संरक्षित किया गया।
- इसलिए साँची बच गया, जबकि अमरावती का अधिकांश गौरव नष्ट हो गया।

Q. सांची का स्तूप सुरक्षित रह गया, किंतु अमरावती क्यों नष्ट हो गया?



मूर्तिकला

सांची के उत्तरी तोरण द्वार का एक हिस्सा :-



- पहली बार देखने पर तो इस मूर्तिकला अंश में फूस की झोंपड़ी और पेड़ों वाले ग्रामीण दृश्य का चित्रण दिखता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उपासना के प्रतीक

- इतिहासकार मूर्तियों की व्याख्या लिखित स्रोतों से करते हैं।
- प्रारंभिक बौद्ध कला में बुद्ध को सीधे न दिखाकर प्रतीकों से दर्शाया गया।
- प्रमुख प्रतीक—वृक्ष और चक्र।
- प्रतीकों का सही अर्थ समझने के लिए कलात्मक परंपराओं को जानना जरूरी है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

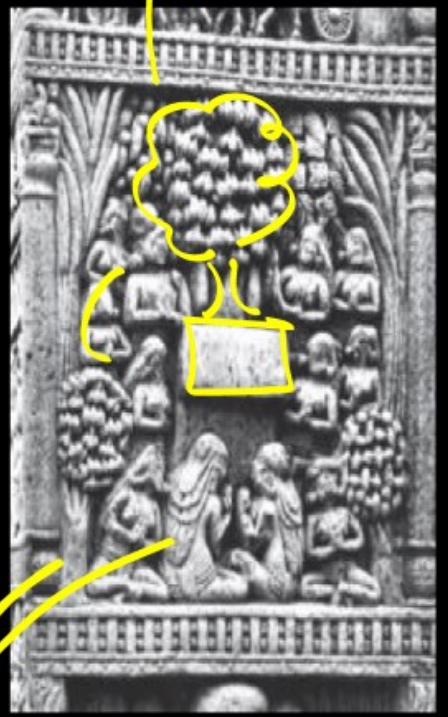
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उपदेश।



अवशेष → मोक्ष



प्रतीक

निर्वाण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोक परंपराऐं



तोरणद्वार पर एक स्त्री

- सांची में उत्कीर्णित बहुत सी अन्य मूर्तियां शायद बौद्ध धर्म से सीधी जुड़ी नहीं थी।
- शालभंजिका :-
- इनमें कुछ सुंदर स्त्रियां भी मूर्तियों में उत्कीर्णित है जो तोरणद्वार के किनारे पर पेड़ पकड़ कर झूलती हुई दिखती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शुरु-शुरु में विद्वान इस मूर्ति के महत्त्व के बारे में थोड़े असमंजस में थे।
- इस मूर्ति का त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नज़र नहीं आता था।
- यद्यपि साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से वे समझ पाए कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है।
- लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे और फल होने लगते थे।
- ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में प्रयुक्त हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सांची में हाथी

- शालभंजिका की मूर्ति से पता चलता है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने बुद्ध-पूर्व और बौद्ध धर्म से इतर दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया।
- साँची की मूर्तियों में पाए गए कई प्रतीक या चिह्न निश्चय ही इन्हीं परंपराओं से उभरे थे।
- सांची में हाथी :- जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन यहाँ पर पाए गए हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

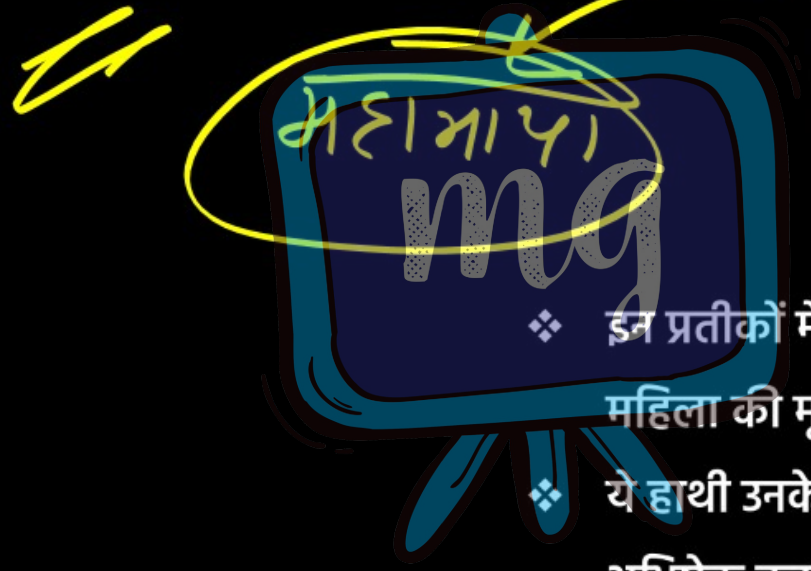
- इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं।
- हालाँकि साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ हैं।
- ऐसा लगता है कि यहाँ पर लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों का उत्कीर्णन किया गया था।
- साथ ही जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गजलक्ष्मी–





- इन प्रतीकों में कमल दल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति प्रमुख है।
- ये हाथी उनके ऊपर जल छिड़क रहे हैं जैसे वे उनका अभिषेक कर रहे हों।

(i) कुछ इतिहासकार उन्हें बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं।

(ii) कुछ उन्हें लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी मानते हैं। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली देवी थीं जिन्हें प्रायः हाथियों के साथ जोड़ा जाता है।

(iii) कुछ इन उत्कीर्णित मूर्तियों को देखने वाले माया और गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ते थे।

सांची में सर्प:-

- कई स्तंभों पर दिखाए गए सर्पों को भी देखिए-



सांची में सर्प

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत से प्राप्त चित्र

- पत्थर की कलाकृतियाँ लंबे समय तक सुरक्षित रह जाती हैं। इसलिए इतिहासकारों को यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है।
- अतीत में चित्रकारी जैसे संप्रेषण के दूसरे माध्यम भी इस्तेमाल किए जाते थे। उनमें जो सबसे अच्छी हालत में बचे हुए हैं वे गुफाओं की दीवारों पर बने चित्र हैं। इनमें अजंता (महाराष्ट्र) की चित्रकारी काफ़ी प्रसिद्ध है।
- अजंता के चित्र जातकों की कथाएँ दिखाते हैं। इनमें राज दरबार का जीवन, शोभा यात्राएँ, काम करते हुए स्त्री-पुरुष और त्यौहार मनाने के चित्र दिखाए गए हैं।

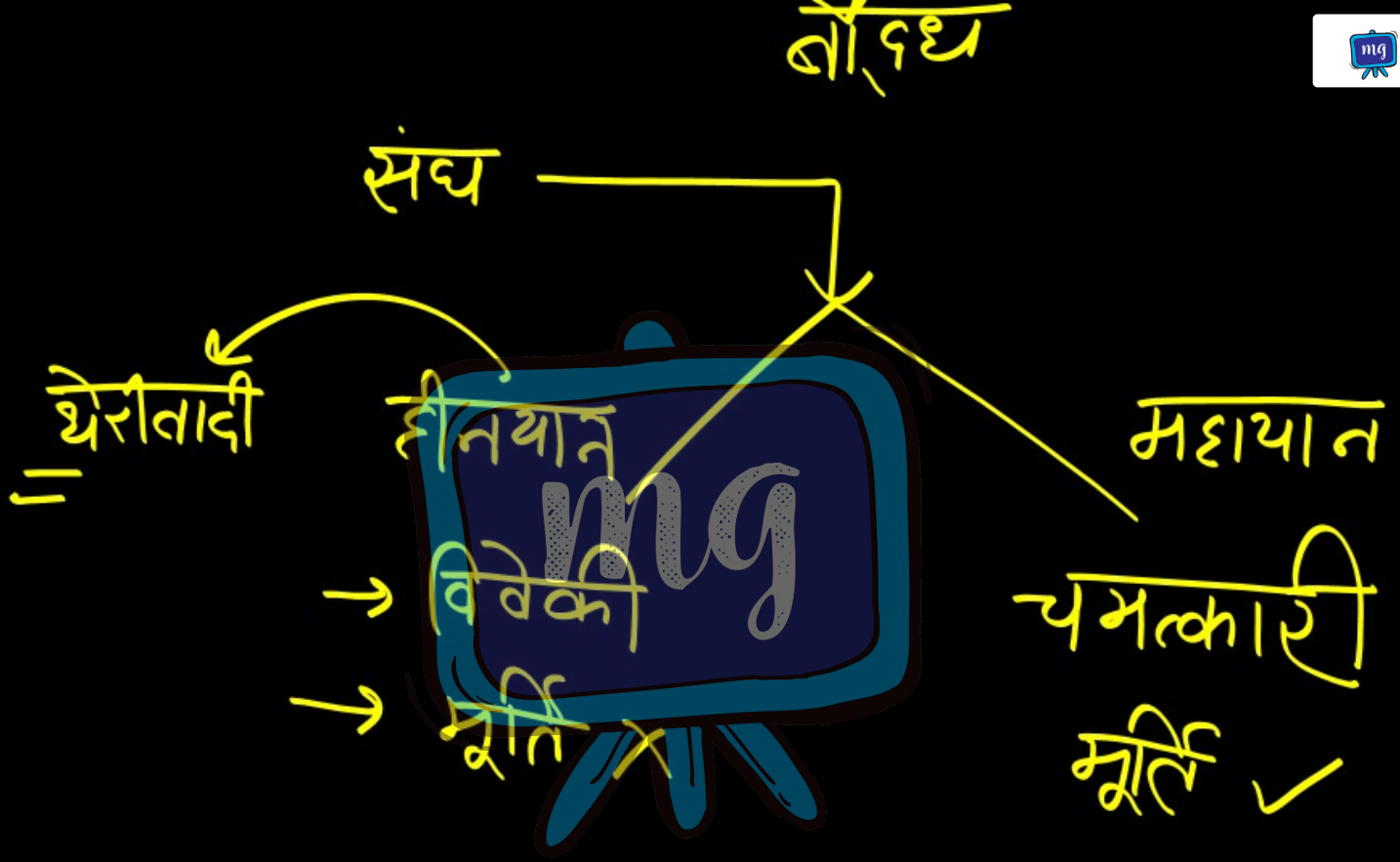
- कलाकारों ने त्रिविम रूप देने के लिए आभाभेद तकनीक का प्रयोग किया।
- कुछ चित्र बिल्कुल स्वाभाविक और सजीव लगते हैं।

अजन्ता से एक चित्र : बैठा हुआ व्यक्ति और उसके सेवक



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नयी धार्मिक परंपराऐं

महायान बौद्ध मत का विकास:–

- ईसा की प्रथम सदी के बाद बौद्ध अवधारणाओं और व्यवहार में बदलाव नज़र आये।
- प्रारंभिक बौद्ध मत में निब्बान के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्त्व दिया गया था। बुद्ध को भी एक मनुष्य समझा जाता था जिन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।
- धीरे-धीरे एक मुक्तिदाता की कल्पना उभरने लगी। यह विश्वास किया जाने लगा कि वे मुक्ति दिलवा सकते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- साथ-साथ बोधिसत्त की अवधारणा भी उभरने लगी।
- बोधिसत्तों को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे।
- लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे। बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे।
- बुद्ध और बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग बन गई।
- चिंतन की इस नयी परंपरा को महायान के नाम से जाना गया।
- जिन लोगों ने इन विश्वासों को अपनाया उन्होंने पुरानी परंपरा को हीनयान नाम से संबोधित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



पहली सदी की बुद्ध मूर्ति, मथुरा

हीनयान या थेरवाद ?

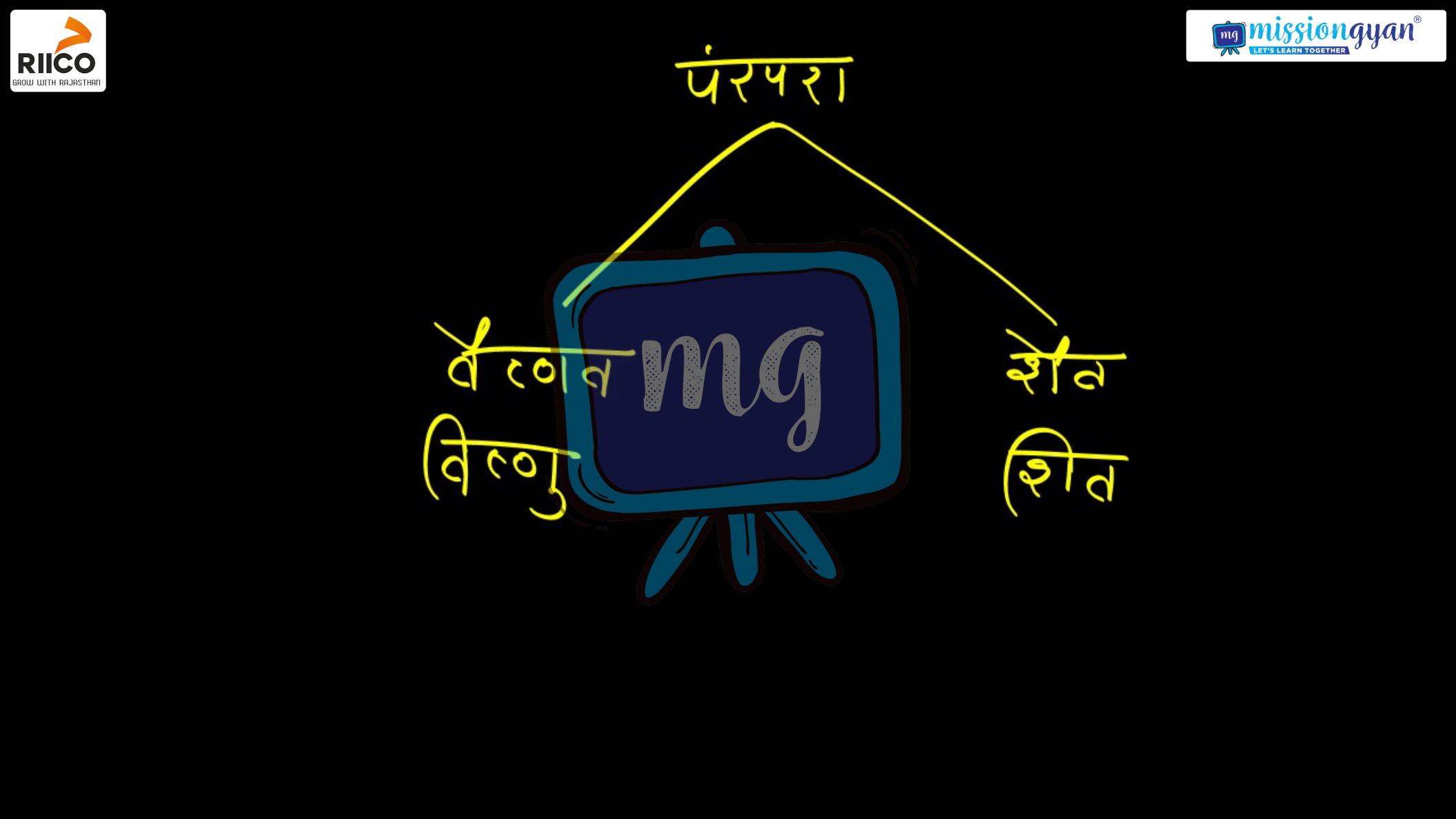
- महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान के अनुयायी कहते थे। लेकिन, पुरातन परंपरा के अनुयायी खुद को थेरवादी कहते थे। इसका मतलब है वे लोग जिन्होंने पुराने, प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बताए रास्ते पर चलने वाले।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पौराणिक हिंदू धर्म का उदय

- मुक्तिदाता की कल्पना सिर्फ बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी।
- इसी तरह के विश्वास एक अलग ढंग से उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है।
  - (i) वैष्णव – वह परंपरा जिसमें विष्णु को सबसे –महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।
  - (ii) शैव – वह संकल्पना जिसमें शिव परमेश्वर है भी शामिल थीं।
- इसके अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को खास महत्त्व दिया जाता था।


पंरपरा
वैष्णव
विष्णु
शैव
शिव

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रकार की आराधना में उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था। इसे भक्ति कहते हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वैष्णववाद

- इसमें कई अवतारों के इर्द-गिर्द पूजा पद्धतियाँ विकसित हुईं।
- इस परंपरा के अंदर दस अवतारों की कल्पना है।
- यह माना जाता था कि पापियों के बढ़ते प्रभाव के चलते जब दुनिया में अव्यवस्था और नाश की स्थिति आ जाती थी तब विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग-अलग रूपों में अवतार लेते थे।
- संभवतः अलग-अलग अवतार देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में लोकप्रिय थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन सब स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मान लेना एकीकृत धार्मिक परंपरा को दर्शाता था।
- कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।
- दूसरे देवताओं की भी मूर्तियाँ बनीं। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था। लेकिन उन्हें कई बार उनको मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है।
- ये सारे चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे।
- इन देवताओं की खूबियों और प्रतीकों को उनके शिरोवस्त्र, आभूषण, आयुधों (हाथ में धारण अस्त्र) और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

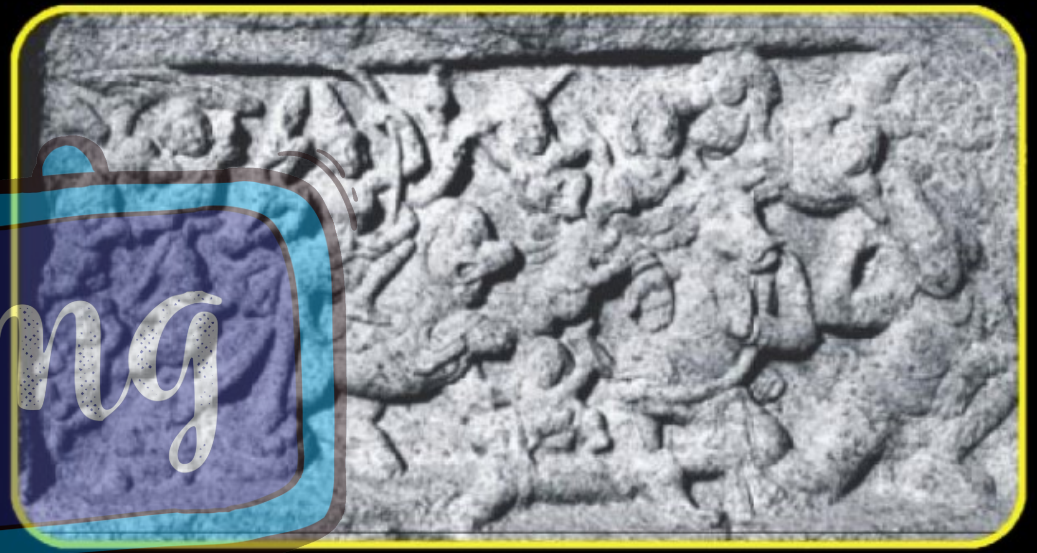
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



विष्णु का वराह अवतार : जिसने उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है। (लगभग छठी सदी, एहोल, कर्नाटक)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



महाबलीपुरम् : (तमिलनाडु) में दुर्गा
की एक मूर्ति (छठी सदी)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तियों के अर्थ तथा पुराण:–

- इन मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को इनसे जुड़ी हुई कहानियों से परिचित होना पड़ता है।
- कई कहानियाँ प्रथम सहस्त्राब्दि के मध्य से ब्राह्मणों द्वारा रचित पुराणों में पायी जाती है जिनमें बहुत से ऐसे किस्से हैं जो सैकड़ों वर्ष पहले रचने के बाद सुने और सुनाये जाते रहे थे।
- इनमें देवी देवताओं की भी कहानियां हैं।
- इन्हें संस्कृत श्लोकों में लिखा गया था तथा इन्हें ऊंची आवाज में पढ़ा जाता था जिसे कोई भी सुन सकता था।

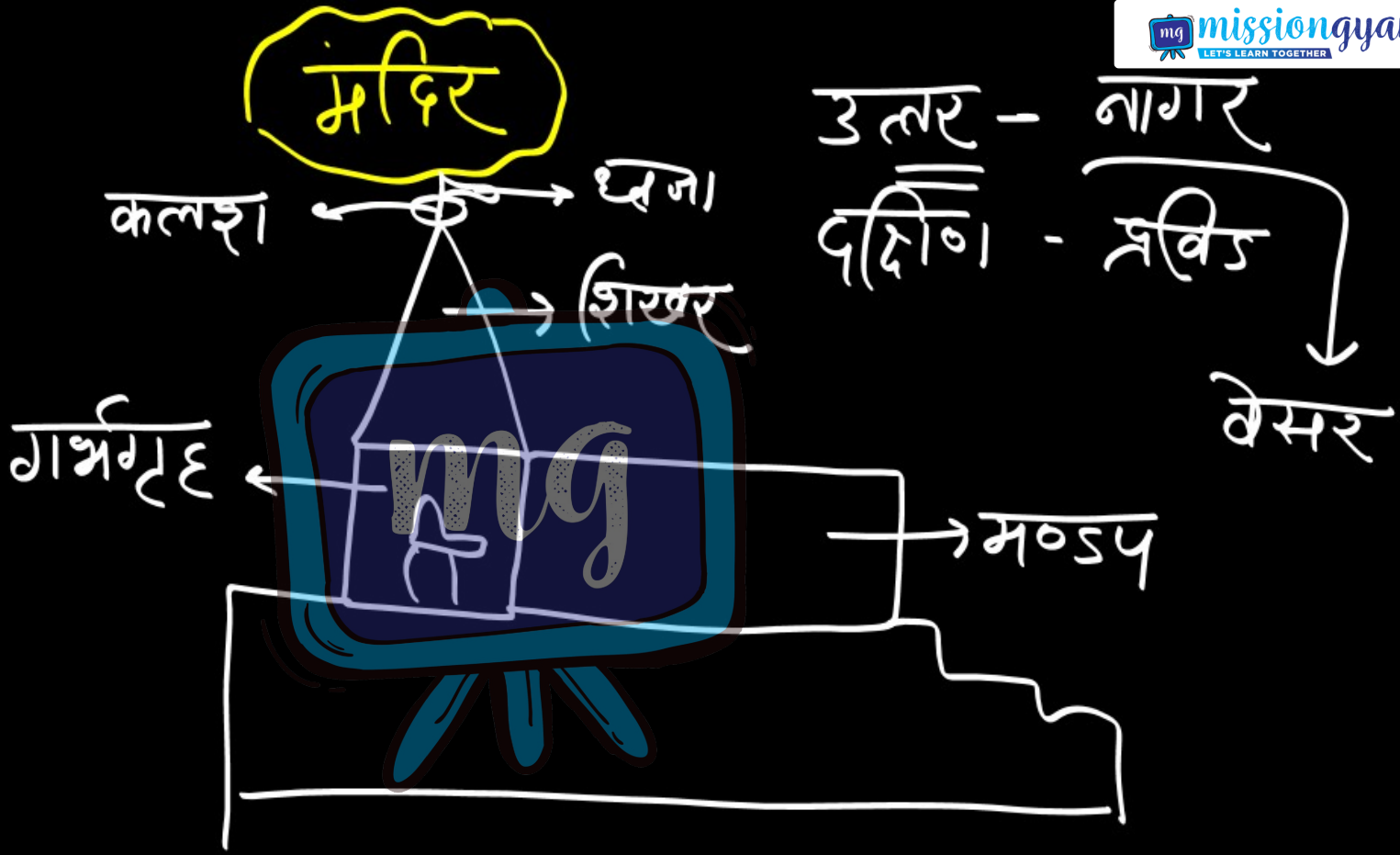
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महिलाऐं और शूद्र जिन्हें वैदिक साहित्य पढ़ने-सुनने की अनुमति नहीं थी, पुराणों को सुन सकते थे।
- पुराणों की ज्यादातर कहानियां आपसी मेल-जोल से विकसित हुई।
- पुजारी, व्यापारी और सामान्य स्त्री-पुरुष एक जगह से दूसरी जगह आते जाते समय अपने विश्वासों और अवधारणाओं का आदान-प्रदान करते थे।
- उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि – वासुदेव कृष्ण मथुरा इलाके के महत्वपूर्ण देवता थे। कई शताब्दियों के दौरान उनकी पूजा देश के दूसरे इलाकों में भी फैल गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मंदिरों का बनाया जाना

- जिस समय साँची जैसी जगहों में स्तूप अपने विकसित रूप में आ गये थे उसी समय देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए मंदिर बनाये गये।
- शुरू के मंदिर एक चौकोर कमरे की तरह थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था।
- इनमें एक दरवाजा होता था जिससे उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था।
- धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ऊँचा ढाँचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मंदिर की दीवारों पर अक्सर भित्ती-चित्र उत्कीर्ण किये जाते थे।



शेषनाग पर आराम करते विष्णु की मूर्ति, देवगढ़ (उ.प्र.), पांचवी सदी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बाद के युगों में मंदिर स्थापत्य का काफी विकास हुआ और मंदिरों के साथ विशाल सभास्थल, ऊँची दीवारें और तोरण भी जुड़ गए। जल आपूर्ति का इंतजाम भी किया जाने लगा।



एक मंदिर, देवगढ़ (उत्तर प्रदेश), पाँचवी सदी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शुरु-शुरु के मंदिरों की एक खास बात यह थी कि इनमें से कुछ पहाड़ियों को काट कर खोखला करके कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाये गये थे।
- कृत्रिम गुफाऐं बनाने की परम्परा काफी पुरानी थी।
- सबसे प्राचीन कृत्रिम गुफाऐं ईसा पूर्व तीसरी सदी में असोक के आदेश से आजीविक सम्प्रदाय के संतों के लिए बनाई गई थीं?



बराबर की गुफाऐं,
बिहार, 300 ई. पूर्व

कैलाशनाथ मंदिर

- मंदिर बनाने की परम्परा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही।
- इसका सबसे विकसित रुप आठवीं सदी के कैलाशनाथ (शिव का एक नाम) के मंदिर में नजर आता है जिसमें पूरी पहाड़ी काटकर उसे मंदिर का रुप दे दिया गया था।

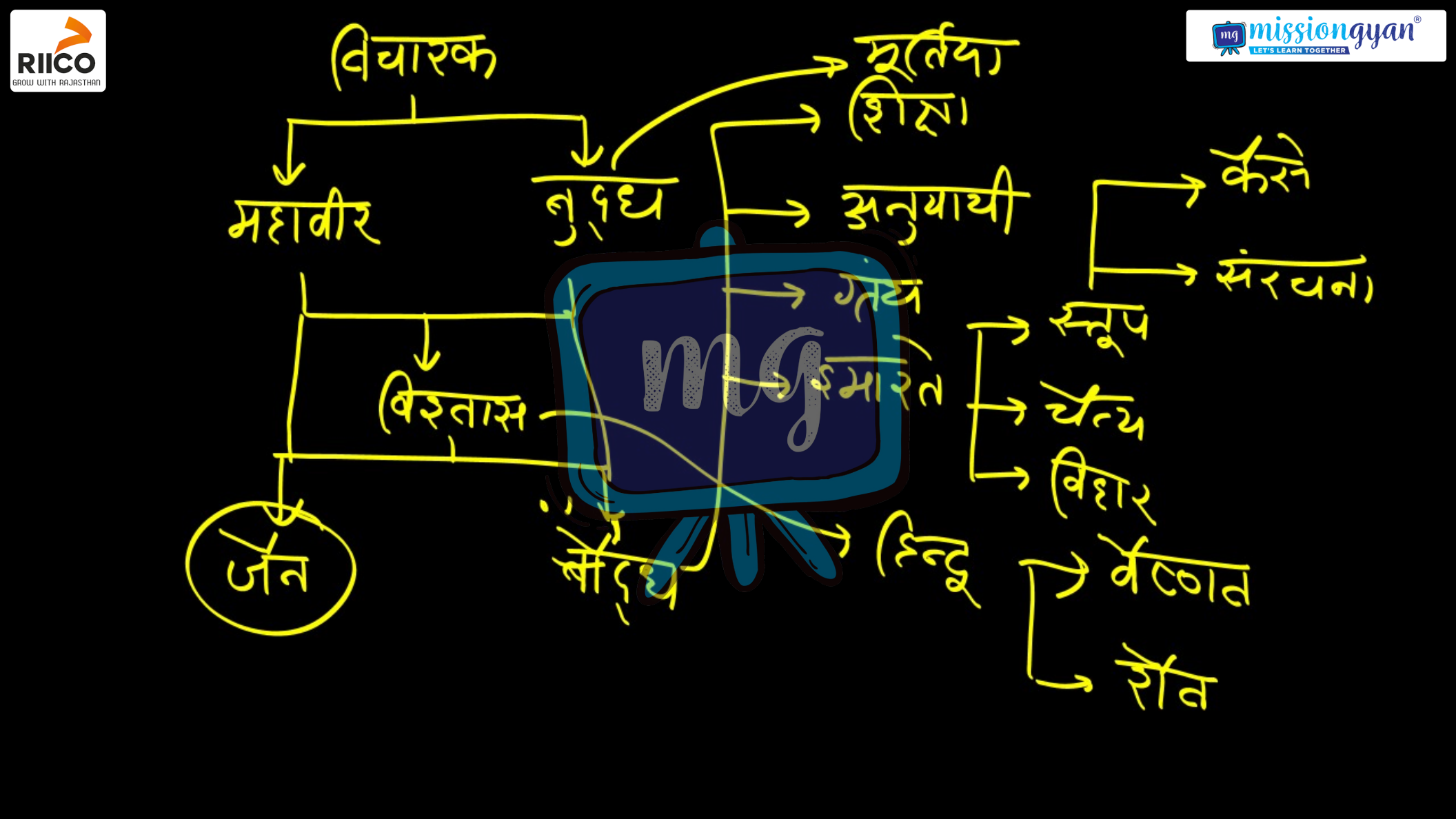
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक ताम्रपत्र अभिलेख जिसमें एलोरा के प्रमुख तक्षक जिसने इनका निर्माण समाप्त करने के बाद आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहता है -
- "हे भगवान, यह मैने कैसे बनवाया ?"



कैलाशनाथ मंदिर एलोरा (महाराष्ट्र) यह सारा ढांचा एक चट्टान को काटकर तैयार किया गया हैं


विचारक
महावीर
बुद्ध
मूर्तियां
शिष्य
अनुयायी
कैसे
संरचना
विस्तार
गतंय
इमारतें
स्तूप
चैत्य
विहार
जैन
बौद्ध
हिन्दू
वैष्णव
शैव

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

क्या हम सब कुछ देख समझ सकते हैं?

- इस अध्याय में अब तक हमें हमारे अतीत की समृद्ध दृश्य परंपराओं की एक झलक मिल चुकी है।
- ये दृश्य परंपराऐं ईंट और पत्थर से निर्मित स्थापत्य कला, मूर्तिकला ओर चित्रकला के रूप में हमारे सामने आई हैं।
- समय के बहाव में बहुत कुछ नष्ट हो गया है लेकिन जो बचा है और संरक्षित है वह हमें उन भव्य कलाकृतियों के निर्माताओं जैसे मूर्तिकारों, राजगीरों और वास्तुकारों की दृष्टि से परिचित कराता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन क्या हम उनके संदेश को बिना दुविधा के अपने आप समझ सकते हैं?
- जो लोग इन कलाकृतियों को देखते और पूजते थे उनके लिए इनका क्या महत्व था?
- क्या हम इस बात को समझ पाऐंगे?